School of Humanities
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में कोविड-19 महामारी की प्रस्तुति का विश्लेषणात्मक अध्ययन" being submitted in partial fulfilment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **Journalism and Mass Communication** under the **School of Humanities**, U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year **2023-2024**.It is a bona fide record of original work carried out under the supervision of **Dr. Sadhana Srivastava** and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

Abhishek Kumar 16/05/25

(Abhishek kumar)
(Enrol. No.:**2300401**)

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)

Sadhana

(Dr. Sadhana Srivastava)
Faculty of Journalism and Mass Communication

डॉ० साधना श्रीवास्तव
सहायक आचार्य
पत्रकारिता एवं जनसंचार, मानविकी विद्याशाखा
उ०प्र०रा०ट०मु०वि०वि०, प्रयागराज

16/05/2025

(Prof. Satyapal Tiwari)
(Director, School of Humanities)

16/05/25

(Prof. P. K. Pandey)
(Director, R&D Cell)

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में कोविड-19 महामारी की प्रस्तुति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY

in
Journalism and Mass Communication
to
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by
Abhishek kumar
Enroll. No. 2300401

Abhishek Kumar
16/05/25

Under the Supervision of
Dr. Sadhana Srivastava
Faculty of Journalism and Mass Communication

डॉ० साधना श्रीवास्तव
पत्रकारिता एवं जनसंचार, मानविकी विद्याशाखा
उ०प्र०रा०ट०मु०वि०वि०, प्रयागराज

School of Humanities
U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipuram (Sector –F), Phaphamau, Prayagraj –211013

Abstract (सारांश):

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर जनजीवन, स्वास्थ्य सेवाओं तथा मीडिया प्रणाली को गहराई से प्रभावित किया। इस संकट के दौरान समाचार पत्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही क्योंकि उन्होंने जनता को सूचना, जागरूकता और दिशानिर्देश प्रदान करने का कार्य किया। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयागराज से प्रकाशित प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों—जैसे अमर उजाला तथा दैनिक जागरण में कोविड-19 महामारी की प्रस्तुति का विश्लेषण करता है।
इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि इन समाचार पत्रों ने महामारी की रिपोर्टिंग किस प्रकार की?क्या उन्होंने भय और अफवाह फैलाने वाली खबरों को प्राथमिकता दी या सकारात्मक और सूचनात्मक सामग्री को बढ़ावा दिया। साथ ही यह भी विश्लेषण किया गया है कि स्वास्थ्य संबंधी दिशा-निर्देशों, सरकारी नीतियों तथा सामाजिक पहलुओं को किस तरह प्रस्तुत किया गया।
शोध पद्धति के अंतर्गत सामग्री विश्लेषण विधि का प्रयोग किया जाएगा, इस शोध कार्य में कोरोना महामारी के तीनों लहरों को लिया गया है,जिसे तीन चरणों में विभाजित किया गया है।1 मार्च 2020 से 31 मार्च 2020,1 मार्च 2021 से 31मई 2021,1 जनवरी 2022 से 31 मार्च 2022 तक प्रकाशित समाचारों का चयन कर उनकी श्रेणीबद्ध समीक्षा की गई जाएगी।
यह शोध मीडिया अध्ययन, जनसंचार और महामारी के समय सूचना के प्रवाह और प्रबंधन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मुख्य शब्द: कोविड-19 महामारी,समाचार पत्र,सामग्री विश्लेषण,स्वास्थ्य संचार ,महामारी रिपोर्टिंग,जनसंचार।

Sadh

Abhishek Kumar

CONTENTS

Sr. No.	Description	Page No.
1	Introduction	5-10
2	Literature Review	10-13
3	Description of the Broad Area	13-14
4	Objectives of the Study	14-14
5	Research Methodology	14-17
6	Expected Outcome of the Research	17-18

References

Plagiarism Report

Abhishek Kumar

1.0 प्रस्तावना

COVID-19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर समाजों व मानव जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। भारत जैसे घनी आबादी वाले देश विशेष रूप से प्रयागराज जैसे शहर में मीडिया की भूमिका महामारी के समय पर और सटीक जानकारी प्रदान करने में महत्वपूर्ण हो गई। हिंदी दैनिक समाचार पत्र जो लोगों के लिए प्रमुख सूचना स्रोत थे। महामारी से संबंधित जानकारी प्रसारित करने में अहम भूमिका निभाई।

यह शोध प्रयागराज से प्रकाशित हिंदी दैनिक समाचार पत्रों में COVID-19 की कवरेज का विश्लेषण किया जायेगा।। इसमें स्वास्थ्य संबंधी दिशा-निर्देश व सरकारी उपाय इत्यादि प्रतिक्रियाओं पर इन समाचार पत्रों द्वारा दी गई जानकारी की गहराई व सटीकता को समझने का प्रयास किया जायेगा। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि संकट के समय में हिंदी दैनिक समाचार पत्रों ने कोविड-19 महामारी की प्रस्तुति कैसे की? यह अध्ययन इस मायने में महत्वपूर्ण है कि यह महामारी के समय प्रयागराज से प्रकाशित दो प्रमुख समाचार पत्रों में स्वास्थ्य कवरेज के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है। इसके निष्कर्ष भविष्य में स्वास्थ्य आपातकाल जैसी परिस्थितियों में मीडिया की रणनीतियों को मार्गदर्शित करने में सहायक हो सकते है। यह शोध क्षेत्रीय संदर्भ में मीडिया के व्यवहार को समझने में योगदान देगा जो अक्सर राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय मीडिया अध्ययन की तुलना में उपेक्षित रहता है। कोविड-19 महामारी ने न केवल मानव जीवन बल्कि समाज और प्रशासन की क्षमता की परीक्षा ली। प्रयागराज जैसे शहर में हिंदी दैनिक समाचार पत्रों ने संकट के दौरान सटीक जानकारी प्रदान कर जनता को जागरूक और सतर्क बनाने में अपनी जिम्मेदारी निभाई। यह अध्ययन इन समाचार पत्रों की कार्यप्रणाली और प्रभावशीलता को समझने का एक प्रयास है। क्षेत्रीय स्तर पर मीडिया के व्यवहार को समझने से न केवल स्वास्थ्य आपातकाल बल्कि अन्य संकटों में भी बेहतर मीडिया रणनीतियों का विकास हो सकता है।

1.1 समाचार पत्र

प्राचीन काल से प्रिंटिंग को एक कला और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के साधन के रूप में देखा गया है| उदाहरण के लिए प्राचीन काल की गुफाओं में बनी कलाकृतियों को देख सकते हैं परंतु पेपर के आविष्कार के बाद इसका प्रभावशीलता और अधिक हो गया| पेपर की अविष्कार ने पुस्तकों का निर्माण संभव किया, जो ज्ञान को प्रसारित करने का साधन बना, समय के साथ इसमें और विस्तार आया और 1440 ई. में गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार के बाद मानो संचार के एक नए युग का उदय हुआ| प्रिंटिंग प्रेस का शुरुआती प्रयोग धर्म के प्रचार के लिए पुस्तकों के निर्माण से हुआ, बड़े पैमाने पर बाइबिल का निर्माण किया गया और लोगों में बांटा गया, जिसका प्रभाव उस समय विस्तृत रूप से देखने को मिला| समय के साथ प्रिंटिंग प्रेस का प्रयोग अन्य वस्तुओं को छापने में भी किया जाने लगा, विश्व में पहली समाचार पत्र 1605 ई. में जर्मनी में प्रकाशित किया गया जिसका नाम Fürnemmen und gedenckwürdigen Historien था| अखबार का प्रकाशन एक ऐतिहासिक परिवर्तन के ओर समाज को अग्रसर किया, अनेक प्रकार की विचारकों के प्रसिद्धि का कारण अखबार ही है| एक समय ऐसा आया कि प्रत्येक बुद्धिजीवी व्यक्ति अखबार का संपादन करने का प्रयास अपने जीवन काल में कभी ना कभी अवश्य किया था| भारत में पहला समाचार पत्र 29 जनवरी 1780 ई. में प्रकाशित किया गया जिसका नाम हिक्की बंगाल गजट था| हिंदी भाषा का पहला समाचार पत्र समाचार दर्पण था जो की साप्ताहिक समाचार पत्र था| समाचार पत्रों की प्रभावशीलता ब्रिटिश काल से ही भारत में देखी जाने लगी थी लोग समाचार पत्रों पर अत्यधिक विश्वास करते थे यही कारण था कि आए दिन बरतनी हुकूमत अखबारों पर कड़े कानून लागू किया करते थे| स्वतंत्रता संग्राम में अखबारों की भूमिका पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं उठा सकता ऐसे सैकड़ों क्रांतिकारी व क्रांतिकारी विचारक थे जो अखबारों के द्वारा अपनी बात आम जनमानस तक पहुंचाने का कार्य करते थे अखबार ही वह साधन था जो समाज के बहुत बड़े तबके को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया| आजादी के पश्चात भी समाचार पत्रों की भूमिका बहुत अहम रही है यही कारण था कि सरकार द्वारा प्रेस आयोग और प्रेस

Abhishek Kumar

Sadhn

कमीशन का गठन किया गया। प्रभावशीलता ही वह कारण था कि औद्योगिक युग में प्रत्येक उद्योगपति किसी न किसी समाचार पत्र से किसी न किसी रूप से जुड़ा हुआ है।

1.2 महामारी

महामारी के लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द "एपिडेमिक" दो यूनानी शब्दों "एपिक" और "डिमोस" से मिलकर बना है। यह समुदाय या क्षेत्र में होने वाली ' असाधारण' घटना होती है और किसी विशेष रोग से संबंधित यह स्वास्थ्य संबंधी घटनाएं 'अपेक्षित मात्रा' संभावित सीमा से स्पष्टत: अधिक होती है। ऐसी कोई भी बीमारी जो अपेक्षित घटना से अधिक संख्या में होती है वह महामारी कहलाती है।

महामारी एक संक्रामक बीमारी का वैश्विक प्रसार है जो कई क्षेत्रों, देशों, या महाद्वीपों में बहुत तेजी से लोगों को प्रभावित करती है। जब कोई संक्रामक बीमारी छुआछूत से फैलने लगती है उसे महामारी कहा जाता है। इस पर नियंत्रण करना बहुत मुश्किल होता है। ऐतिहासिक रूप से, महामारी ने मानव इतिहास पर स्थायी प्रभाव डाला है। उदाहरण के रूप में 1918 की स्पैनिश फ्लू ,चेचक हैजा, प्लेग जैसी बीमारी भी महामारी के रूप में घोषित हो चुकी है ।ये बीमारियां दुनियाभर में करोड़ों की संख्या में मौतों का कारण बना हैं। कोविड-19 को विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 21वीं सदी की 'महामारी' घोषित किया।

1.3 कोविड-19

चीन के वुहान शहर से फैले कोरोना वायरस की वजह से पूरा विश्व इस महामारी की चपेट में आ गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O) ने 30 जनवरी 2020 को इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर की पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी घोषित कर दिया। इसके तीव्र प्रसार से बचने के लिए पूरी दुनिया में लॉकडाउन को बेहतर रूप में देखा गया। 11 फरवरी को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने घोषणा की कि नए कोरोना वायरस के कारण होने वाली बीमारी को कोविड-19 कहा जाएगा, नए कोरोना वायरस की पहचान SARS-CoV-2 के रूप में की गई।

भारत में कोविड-19 का पहला केस केरल से सामने आया। 27 जनवरी, 2020 को, एक 20 वर्षीय महिला सूखी खांसी और गले में खराश की शिकायत लेके जनरल अस्पताल, त्रिशूर, केरल के आपातकालीन विभाग में आई। जांच के बाद कोविड-19 की पुष्टि हुई। महिला कुछ दिन पहले ही चीन के वुहान शहर से भारत लौटी थी।

भारत में 22 मार्च 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर जनता कर्फ्यू लगाया गया। उसके बाद 25 मार्च 2020 को देश में पहला लॉकडाउन घोषित किया गया। भारत में कुल 5 चरणों में लॉक डाउन लगाया गया। पहले चरण में 21 दिन (25 मार्च-14 अप्रैल),दूसरा चरण 19 दिन (15 अप्रैल-3 मई), तीसरा चरण 14 दिन (4 मई-17 मई)चौथा चरण 14 दिन (18 मई-31 मई), पांचवा चरण 30 दिन (1 जून- 30 जून).

1.4 कोविड-19 के प्रति जागरूकता में हिंदी समाचार पत्रों की भूमिका

हमारे जीवन में समाचार पत्रों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। इसे शब्दों में नहीं आंका जा सकता। समाचार पत्र हमें देश-विदेश, स्थानीय, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक समाचारों के साथ-साथ दुनिया के सभी पहलुओं से अवगत कराता है। यह हमारे लोगों तक प्रतिदिन समाचार पहुँचाने का माध्यम भी है। शायद यही कारण है कि यह अधिकतर सुबह के समय ही प्रकाशित होता है। अधिकांश लोग इसे पढ़ते ही पढ़ना चाहते हैं ताकि वे हर बात से अपडेट रहें। समाचार पत्र भी सभी आयु वर्ग के लोग पढ़ते हैं। समाचार पत्र तीन मुख्य कार्य करते हैं- सूचना, जागरूकता और मनोरंजन। इनमें से दो समाज में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, एक सूचना देना और दूसरा हमें जागरूक करना।

अखबार की विश्वसनीयता को चंद शब्दों में अकबर इलाहाबादी ने कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया है "खींचो न कमानों को न तलवार निकालो ,जब तोप मुक़ाबिल हो तो अख़बार निकालो"| उपरोक्त पंक्तिया अकबर इलाहाबादी द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में

Abhishek Kumar

Sadhna

अंग्रेजी हुकूमत से लोहा लेने के लिए अखबारों को प्रभावी हथियार के रूप में बताया था| वहीं नेपोलियन ने भी कहा था कि चार विरोधी अखबारों की मारक क्षमता के आगे हजारों बंदूकन की ताकत बेकार है| आज के परिपेक्ष में हमें देखने को मिलता है कि अखबारों की पहुंच और प्रभावशीलता दोनों में वृद्धि हुई है शायद इसका कारण शिक्षा में वृद्धि है परंतु किसी भी स्तर पर अखबार की प्रभावशीलता पर प्रश्नचिन्ह उठाना वर्तमान समय में संभव नहीं है यद्यपि इसके उदाहरण के तौर पर हम देख सकते हैं कि अखबारों में खबर के साथ बड़े पैमाने पर विज्ञापनों का चलन आ गया है जो इसकी प्रभावशीलता के कारण ही इसे एक आर्थिक रूप देने में सक्षम हुआ है|

कॉविड-19 के दौर में लोगों में काफी डर का माहौल बना हुआ था ऐसे में सरकार और स्वास्थ्य संस्थानों द्वारा प्रत्येक संचार माध्यम से लोगों तक जागरूकता फैलाने की कोशिश की गई थी| अखबारों की भी एक बड़ी भूमिका इसमें रही थी| इस अध्ययन में उस समय में प्रकाशित समाचार पत्रों में कोविड- 19 संबंधी किस प्रकार के समाचारों को समाचार पत्रों में अधिक स्थान मिला है और लोगों में उसका क्या प्रभाव पड़ा था इसका अध्ययन किया जाएगा |

हमारे जीवन में समाचार पत्रों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। इसे शब्दों में नहीं आंका जा सकता। समाचार पत्र हमें देश-विदेश, स्थानीय, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक समाचारों के साथ-साथ दुनिया के सभी पहलुओं से अवगत कराता है। यह हमारे लोगों तक प्रतिदिन समाचार पहुँचाने का माध्यम भी है। शायद यही कारण है कि यह अधिकतर सुबह के समय ही प्रकाशित होता है। अधिकांश लोग इसे पढ़ते ही पढ़ना चाहते हैं ताकि वे हर बात से अपडेट रहें। समाचार पत्र भी सभी आयु वर्ग के लोग पढ़ते हैं। समाचार पत्र तीन मुख्य कार्य करते हैं- सूचना, जागरूकता और मनोरंजन। इनमें से दो समाज में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, एक सूचना देना और दूसरा हमें जागरूक करना|

1.5 संचार

संचार सूचनाओं व विचारों को व्यक्तियों या समूहों के बीच विभिन्न तरीकों से आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया है। इसमें एक प्रेषक शामिल होता है जो संदेश भेजता है और एक प्राप्तकर्ता जो संदेश की प्राप्त करता है। प्रभावी संचार के लिए स्पष्टता ,संक्षिप्तता और श्रोताओं की समझ आवश्यक होती है।संचार मौखिक हो सकता है जिसमें बोले या लिखे गए शब्द शामिल होते हैं या गैर-मौखिक हो सकता है जिसमें शारीरिक भाषा ,इशारे ,चेहरे के भाव व आवाज़ का स्वर शामिल होता है। यह आमने-सामने,फोन पर,लिखित पत्राचार के माध्यम से या ईमेल,सोशल मीडिया और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसी डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से होता हो सकता है।

संचार का उद्देश्य सूचनाओं को साझा करना और निर्णय लेने में सुविधा प्रदान करना है। यह व्यक्तिगत संबंधों,व्यावसायिक अंतःक्रियाओं, शिक्षा और शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने ,सक्रिय रूप से सुनने और उचित प्रतिक्रिया देने के लिए प्रभावी "संचार कौशल" आवश्यक हैं।संचार मानवीय बातचीत का एक मूलभूत पहलू है जो जीवन के सभी क्षेत्रों में सहयोग और समझ के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रयागराज से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी दैनिक समाचार पत्र "दैनिक जागरण" व अमर "उजाला" में स्वास्थ्य संबंधी समाचारों की कवरेज के बारे में आगे बढ़ने से पहले, 'स्वास्थ्य संचार' शब्द पर चर्चा करना महत्वपूर्ण है।

1.6 स्वास्थ्य संचार

स्वास्थ्य संचार शब्द में दो शब्द शामिल हैं- स्वास्थ्य और संचार। यह शब्द स्पष्ट रूप से बताता है कि यह स्वास्थ्य के बारे में संचार है। सरल शब्दों में कोई भी संचार, जो किसी भी तरह से लोगों के स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों पर प्रकाश डालता है, उसे स्वास्थ्य संचार कहा जा सकता है। इस तरह के संचार में मौखिक और लिखित दोनों रणनीतियाँ शामिल हैं, जिनका उद्देश्य लोगों को स्वस्थ विकल्प चुनने के लिए प्रभावित करना और उन्हें सशक्त बनाना है।

Sadhan Abhishek Kumar

"स्वास्थ्य संचार शब्द की उत्पत्ति 1961 में देखी जा सकती है जब यू.एस. नेशनल हेल्थ काउंसिल ने एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य मंच का आयोजन किया था, जहाँ स्वास्थ्य संचार के समक्ष चुनौतियों पर चर्चा की गई थी।" (हेलेन 1962). एक साल बाद इस शब्द का फिर से इस्तेमाल किया गया और स्वास्थ्य संचार पर एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में चर्चा इस बात पर केंद्रित थी कि लोगों तक स्वास्थ्य संबंधी जानकारी पहुँचाने में तकनीकों को कैसे उपयोगी बनाया जाए। ("यू.एस. स्वास्थ्य शिक्षा और कल्याण विभाग, 1963").

1.7 स्वास्थ्य संचार की परिभाषा

स्वास्थ्य संचार को "लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संचार का प्रभावी ढंग से उपयोग करने का विज्ञान और कला" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है **(एसएचसी, 2017)।**

डब्ल्यूएचओ (2003) का कहना है कि "स्वास्थ्य संचार विभिन्न संचार गतिविधियाँ करता है जैसे कि अंतरवैयक्तिक संचार, सार्वजनिक वकालत, सामुदायिक लामबंदी और पेशेवर संचार"|

सीडीसी (रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र) यूएसए और नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट के अनुसार- स्वास्थ्य संचार "लोगों के निर्णयों को सूचित करने और प्रभावित करने के लिए संचार से संबंधित रणनीतियों का अध्ययन और उपयोग है, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में सुधार होता है (2001)"

1.8 स्वास्थ्य संचार में प्रिंट मीडिया की भूमिका

सार्वजनिक स्वास्थ्य में प्रिंट मीडिया की भूमिका अखबार बीमारियों और संक्रमण के प्रसार को रोकने तथा लॉकडाउन लागू करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा लागू किए गए उपायों के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करने में लगन से लगे थे। समाचार पत्रों में इस व्यापक कवरेज ने न केवल सरकारों को खामियों की पहचान करने और उन्हें दूर करने में मदद की है,बल्कि इस महत्वपूर्ण अवधि के दौरान आम जनता को सुझाव देने के लिए एक माध्यम के रूप में भी काम किया है। इसके अलावा, प्रिंट मीडिया ने लोगों के बीच स्वच्छता संबंधी आदतों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।प्रिंट मीडिया ने ऐतिहासिक रूप से सार्वजनिक स्वास्थ्य संकटों के दौरान महत्वपूर्ण जानकारी प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उल्लेखनीय रूप से, प्रिंट मीडिया पोलियो उन्मूलन मिशन,एड्स, एन्सेफलाइटिस, एच।एन। स्वाइन फ्लू और कई अन्य बीमारियों जैसे महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संकटों के दौरान जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया हैं।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत सैद्धांतिक पृष्ठभूमि के रूप में मीडिया के तीन सिद्धांतों को लिया गया है|

- मीडिया का सामाजिक उत्तरदायित्व सिद्धांत
- मीडिया का लोकतांत्रिक भागीदारी सिद्धांत
- गेटकीपिंग सिद्धांत

Sadhan

Abhishek Kumar

"संदेशों की विशेष विशेषताओं को व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ रूप से पहचानकर अनुमान लगाने की कोई तकनीक।" (होल्स्टी से, 1968)

अंतर्वस्तु विश्लेषण एक शोध उपकरण है जिसका उपयोग कुछ दिए गए गुणात्मक डेटा (यानी पाठ) के भीतर कुछ शब्दों, विषयों या अवधारणाओं की उपस्थिति निर्धारित करने के लिए किया जाता है। अंतर्वस्तु विश्लेषण का उपयोग शोधकर्ता ऐसे कुछ शब्दों, विषयों या अवधारणाओं की उपस्थिति, अर्थ और संबंधों को माप और विश्लेषण कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, शोधकर्ता पूर्वाग्रह या पक्षपात की खोज के लिए किसी समाचार लेख में प्रयुक्त भाषा का मूल्यांकन कर सकते हैं। इसके बाद शोधकर्ता पाठ के भीतर के संदेशों, लेखकों, दर्शकों और यहां तक कि पाठ के आसपास की संस्कृति और समय के बारे में अनुमान लगा सकते हैं।

डेटा के स्रोत साक्षात्कार, ओपन-एंडेड प्रश्न, क्षेत्र अनुसंधान नोट्स, वार्तालाप, या वस्तुतः संचार भाषा की किसी भी घटना (जैसे किताबें, निबंध, चर्चा, समाचार पत्र की सुर्खियाँ, भाषण, मीडिया, ऐतिहासिक दस्तावेज़) से हो सकते हैं। एक एकल अध्ययन अपने विश्लेषण में पाठ के विभिन्न रूपों का विश्लेषण कर सकता है। अंतर्वस्तु विश्लेषण का उपयोग करके पाठ का विश्लेषण करने के लिए प्रबंधनीय कोड श्रेणियों (यानी "कोड") में कोडित किया जाना चाहिए, या तोड़ दिया जाना चाहिए। एक बार जब पाठ को कोड श्रेणियों में कोडित किया जाता है, तो डेटा को और भी संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए कोड को "कोड श्रेणियों" में वर्गीकृत किया जा सकता है।

2.0 साहित्य की समीक्षा

सिंह आर अर्चना , ओहरी प्रियंका , सिंह इशरत (2021) इस शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा कोविड-19 महामारी के दौरान प्रकाशित होने वाले दो राष्ट्रीय समाचार पत्र जिनमें से अंग्रेजी का टाइम्स ऑफ इंडिया एवं हिंदी का दैनिक भास्कर को इस शोध कार्य में चयनित किया गया है। इस अध्ययन कार्य को 15 फरवरी 2020 से 15 मार्च 2020 तक प्रकाशित होने वाले अखबारों पर किया गया है।प्रस्तुत शोध कार्य में अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग करते हुए उपरोक्त दिए समय में प्रकाशित समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित खबरों का विश्लेषण किया गया है। शोधकर्ता द्वारा समाचार पत्र के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित खबरों को 17 विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है जिनमें से कोरोना से प्रासंगिक खबर अंग्रेजी समाचार पत्र में 125 व तत्कालिक खबर 120 है वही हिंदी समाचार पत्र में प्रकाशित कोरोना से संबंधित खबरों की संख्या 43 दिन में से तात्कालिक खबर 34 है। इस शोध कार्य में यह निष्कर्ष पाया गया है कि समाचार पत्रों ने कोरोना काल के दौरान सामाजिक दायित्व का निर्माण करते हुए लोगों की समस्याओं से संबंधित खबरों को प्राथमिकता दी।

मार्टिन मैथ्यू जे. पी. (2021) इस शोध कार्य के अंतर्गत चार अंग्रेजी राष्ट्रीय समाचार पत्रों को सम्मिलित किया गया है जो इस प्रकार है टाइम्स ऑफ इंडिया, द इंडियन एक्सप्रेस, द दैनिक जागरण टाइम्स और डीएनए। इस शोध में कोरोना काल के दौरान उपरोक्त समाचार पत्रों में कोरोना से संबंधित खबरों की अचानक से आई वृद्धि में वास्तविक खबरों एवं फेक न्यूज़ (असत्य खबर) के संचार पद्धति का अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य के अंतर्गत शोधकर्ता ने 1 जनवरी 2020 से 30 अप्रैल 2020 तक के समाचार पत्रों का अध्ययन किया है। इस अध्ययन में अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग करते हुए SPSS सॉफ्टवेयर द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। इस शोध कार्य मे यह निष्कर्ष पाया गया है कि सूचनाओं के अभिभार के साथ-साथ गलत सूचनाएं भी अत्याधिक मात्रा में प्रकाशित हो रही हैं। जिसके लिए समाचार पत्रों को विभिन्न रिपोर्ट के माध्यम से पाठकों को जागरूक करना चाहिए।

Sadhan

Abhishek Kumar

सुल्ताना निगर तहमीना ,संदीप , काकडे ओंकारागोडा (2021) इस शोध कार्य में कर्नाटक के अंदर प्रसारित होने वाले क्षेत्रीय समाचार चैनलों द्वारा कोविड-19 महामारी के दौरान दर्शकों में जागरूकता एवं दर्शकों का इन चैनलों के प्रति विश्वसनीयता का अध्ययन किया गया है। इस शोध के अंतर्गत उत्तरदाताओं के सामाजिक जनसांख्यिकीय विशेषताओं को जानने का प्रयास किया गया है। इस शोध में शोधकर्ता द्वारा व्याख्यात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में कुल 120 उत्तरदाताओं द्वारा प्रश्नावली विधि द्वारा आंकड़ों को एकत्रित किया गया है, प्रश्नावली विधि गूगल फॉर्म का प्रयोग किया गया है। इस शोध कार्य में यह निष्कर्ष में पाया गया कि कर्नाटक के अंदर प्रसारित होने वाले क्षेत्रीय समाचार चैनल कोविड-19 के प्रति जागरूकता लाने में सकारात्मक भूमिका निभाई और दर्शकों में समाचार चैनलों के प्रति विश्वसनीयता देखने को मिली है पर tv9kannada चैनल के प्रति लोगों की विशेष विश्वसनीयता देखने को मिली है|

नगून्दे सोनाली , काले मनीष (2021) इस शोध कार्य में कोरोना काल के दौरान प्रिंट मीडिया की विश्वसनीयता का अध्ययन किया गया है। इसमें गुणात्मक विधि के अंतर्गत पूर्व में किए गए अध्ययनों का हवाला देते हुए निष्कर्ष प्राप्त किया गया है। शोधकर्ता ने "एबास फील्ड और ब्रांड साल्यूंशस" के द्वारा किए गए सर्वेक्षण का हवाला देते हुए बताया है कि लॉकडाउन के दौरान अखबार के पाठकों की संख्या में वृद्धि आई थी। इनके सर्वेक्षण के परिणाम से पता चलता है कि जहां लॉकडाउन से पहले 16% लोग अखबार पढ़ने में अपने दिन के 1 घंटे से अधिक समय देते थे वही लॉकडाउन के दौरान यही संख्या बढ़कर 38% हो गई। यानी लॉकडाउन के दौरान यह संख्या दोगुनी से भी अधिक हो गई। उपरोक्त दिए गए अध्ययन में "एबास फील्ड और ब्रांड साल्यूंशस" ने अपने अध्ययन में सर्वेक्षण को टेलिफोनिक विधि द्वारा किया था। जिसमें यह दावा किया गया है कि प्रिंट मीडिया की विशेषता के कारण पाठकों का जुड़ाव और गहरा हुआ है जहां लॉकडाउन से पहले पाठकों द्वारा अखबार को पढ़ने में औसत 38 मिनट दिया जाता था वह समय लॉकडाउन के दौरान बढ़कर औसतन 60 मिनट हो गया।

जायसवाल श्याम हर्षित, (2020), प्रस्तुत शोध पत्र में समाचार के तीन माध्यमों प्रिंट मीडिया, डिजिटल मीडिया और टेलीविजन मीडिया में कोरोना महामारी से जुड़े रिपोर्टिंग का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन की समय सीमा 11 अप्रैल 2020 से 17 अप्रैल 2020 तक रही है। इस अध्ययन के लिए उपरोक्त दिए गए माध्यमों में 2-2 नमूने का चयन किया गया है। प्रिंट मीडिया के अंतर्गत दैनिक भास्कर और दैनिक जागरण   समाचार पत्र को सम्मिलित किया गया है। वही डिजिटल मीडिया में बीबीसी हिंदी और लल्लन टॉप को लिया गया है तथा टीवी न्यूज़ चैनलों में से अंतर्गत एनडीटीवी और आज तक को लिया गया है।

इस अध्ययन का उद्देश्य कोरोना महामारी के दौरान समाचार के विभिन्न माध्यमों द्वारा लोगों तक वस्तुपरक सूचनाएं पहुंचाने में किस प्रकार की भूमिका निभाई है। इस अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि उपरोक्त लिए समय सीमा में कोरोना महामारी हुआ उससे जुड़े मुद्दों पर विस्तृत रिपोर्टिंग हुई है। इसके बावजूद वैज्ञानिक व चिकित्सा पहलुओं से संबंधित पर रिपोर्टिंग बहुत कम रही है। अध्ययन समय सीमा के दौरान कोरोना संबंधित समाचारों को अन्य समाचारों से अधिक प्राथमिकता दी गई है। दैनिक जागरण   समाचार पत्र में चिकित्सा अनुसंधान व वैज्ञानिक आधार पर अधिक प्राथमिकता दी गई है। वही डिजिटल माध्यम में बीबीसी हिंदी में भी चिकित्सीय अनुसंधान व वैज्ञानिक आधार पर रिपोर्टिंग की गई है। इस अध्ययन में पाया गया है कि प्रिंट व डिजिटल माध्यम की तुलना में टीवी माध्यम का प्रदर्शन निराशाजनक रहा है।

Rehman, A. U., Zakar, R., Zakar, M. Z., Hani, U., Wrona, K. J., & Fischer, F. (2021) इस शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा मीडिया के माध्यम से कोविड-19 महामारी के बारे में सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियानों का मूल्यांकन किया गया है, जिसका प्रमुख केंद्र रावलपिंडी, पाकिस्तान के जनसंख्या पर आधारित है। इस अध्यन के लिए प्री-पोस्ट डिज़ाइन का उपयोग करके एक मात्रात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमे 384 उत्तरदाताओं के माध्यम से डाटा को

Sadhana.

Abhishek Kumar

एकत्रित किया गया है। इस अध्ययन से पता चलता है कि COVID-19 महामारी पर सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियानों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।महामारी के दौरान सोशल मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के उपयोग काफ़ी बढ़ गया था।कोविड-19 महामारी के खिलाफ़ लोगो में जागरूकता बढ़ाने के लिए सरकार और मीडिया के बीच सक्रिय सहयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

Pandey, H. K., & Kumar, S. (2020) इस शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा कोरोना वायरस रोग के बारे में जागरूकता फैलाने में प्रिंट मीडिया द्वारा निभाई गई भूमिका का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है इस अध्ययन को करने के लिए वस्तु विश्लेषण शोध पद्धति के अंतर्गत गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार के आंकड़ों को प्रयोग में लिया गया है। आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए विषय वस्तु विश्लेषण के साथ-साथ सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत प्रश्नावली उपकरण के माध्यम से 106 उत्तरदाताओं के सहयोग से आंकड़ों को एकत्रित किया गया है| शोधकर्ता द्वारा मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों का उपयोग किया गया है। इस अध्यन में समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले स्वास्थ्य समस्याओं से संबंधित खबरों और कोविड-19 संबंधित जागरूकता प्रसारित करने वाले खबरों का विश्लेषण किया है। शोधकर्ता ने इस शोधकार्य के लिए राजस्थान की प्रचलित सामाचार-पत्र राजस्थान पत्रिका का चयन किया है।प्राप्त परिणामों के अनुसार 90% लोगों का मानना है कि समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले कोविड-19 संबंधित खबरों से उन्हें महामारी के विषय में जागरूकता मिली है।अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि मिथकों और संदेहों को दूर करने एवं महामारी के बारे में जागरूकता बढ़ाने और सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा पूर्ण योगदान दिया है

Dhanashree, Himani Garg, Anjali Chauhan, Manisha Bhatia, Gaurav Sethi, and Gopal Chauhan. (2020). इस अध्ययन में उत्तर भारत में कोविड-19 महामारी के दौरान जनता पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का गहराई से अध्ययन किया गया। 23 जून से 3 जुलाई, 2020 तक एक ऑनलाइन सर्वेक्षण के माध्यम से 10 वर्ष से अधिक आयु के उत्तरदाताओं को शोध कार्य में सामिल किया गया है| शोध में मीडिया उपभोग पैटर्न में महत्वपूर्ण बदलाव का पता चला। लॉकडाउन के दौरान, इंटरनेट और सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ गया और साथ ही टीवी समाचारों पर निर्भरता भी बढ़ गई। इसके विपरीत लोगों में समाचार पत्रों, रेडियो और पत्रिकाओं जैसे पारंपरिक मीडिया में गिरावट का अनुभव हुआ। अध्ययन महत्वपूर्ण COVID-19 जानकारी के प्रसार में जनसंचार माध्यमों में विशेष रूप से इंटरनेट और सामाजिक प्लेटफ़ार्मों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देता है। हालाँकि, यह स्वास्थ्य संकट के दौरान सार्वजनिक हित में तथ्य-जांच के महत्व पर प्रकाश डालते हुए भ्रामक जानकारी के खिलाफ सतर्कता की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इस शोध से यह निष्कर्ष अभूतपूर्व समय के दौरान सूचना के सटीक प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार मीडिया रिपोर्टिंग की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

Zafri, N. M., Afroj, S., Nafi, I. M., & Hasan, M. M. U. (2021). इस शोध कार्य में शोधकार्य द्वारा बांग्लादेश में COVID-19 महामारी के दौरान स्थानीय अख़बारों को सामग्री विश्लेषण के माध्यम से एक महामारी प्रबंधन का कार्यक्रम विकसित किया। इस कार्य को करने के लिए 1 जनवरी 2020 से 31 अक्टूबर 2020 तक "bdnews24.com", "New Age", और "Prothom Alo English" नामक तीन प्रसिद्ध स्थानीय अख़बारों से एकत्र किए गए और विश्लेषित किए गए हैं, जो कुल 7,209 अख़बार लेखों को शामिल करते हैं। शोधकर्ता द्वारा इस शोध को निष्कर्ष पाया कि भविष्य में किसी भी प्रकार की महामारी प्रबंधन के लिए यह अनुसंधान किसी भी जैविक खतरे बचाव के लिए चरणबद्ध तरीके से समाधान प्राप्त करेगा।

Zeng, L. (2023, February 3) इस अध्ययन में COVID-19 महामारी के दौरान medRxiv और BioRxiv पर प्री-
प्रिंट सामग्री की विषय वस्तु विश्लेषण और सांख्यिकीय विश्लेषण का प्रयोग करते हुए वैज्ञानिक परिणाम को तेजी से प्रसारित
करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का पता किया गया है। जबकि वैज्ञानिक समीक्षा में देरी के बिना प्री-प्रिंट द्वारा त्वरित
साझाकरण की सराहना करते हैं, लेकिन जांच की अनुपस्थिति के कारण सार्वजनिक प्रदर्शन के बारे में चिंताएं पैदा होती हैं। इस
शोध से यह निष्कर्ष निकला की कोविड-19 से संबंधित विज्ञान तक सार्वजनिक पहुंच पर प्री-प्रिंट के अभूतपूर्व प्रभाव को
रेखांकित करते हैं व विशेष रूप से पता चलता है कि समग्र मीडिया कवरेज उप-इष्टतम नहीं है। जिसमें डिजिटल समाचार प्री-
प्रिंट रिपोर्टिंग में पारंपरिक मीडिया से बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। यह अध्ययन उन्नत स्वास्थ्य संचार के लिए डिजिटल मीडिया
का लाभ उठाने का सुझाव देता है। अनुसंधान महामारी के दौरान विज्ञान संचार के विकास में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है
और सूचना प्रसार को अनुकूलित करने के लिए व्यावहारिक सिफारिशें प्रदान करता है।

3. व्यापक क्षेत्र का वर्णन

ह शोध विषय जनसंचार एवं पत्रकारिता के अंतर्गत आता है, विशेष रूप से प्रिंट मीडिया की भूमिका पर केंद्रित है। इस अध्ययन में प्रयागराज से प्रकाशित प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों (जैसे अमर उजाला,दैनिक जागरण) में कोविड-19 महामारी की खबरों की प्रस्तुति, विषय-वस्तु, रिपोर्टिंग शैली, समाचार चयन और जनता पर प्रभाव का विश्लेषण किया जाएगा।

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर जनजीवन, स्वास्थ्य व्यवस्था और मीडिया की कार्यप्रणाली को अभूतपूर्व रूप से प्रभावित किया। इस संकट के समय में मीडिया विशेषकर समाचार पत्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। यह अध्ययन प्रयागराज से प्रकाशित प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों में कोविड-19 महामारी की प्रस्तुति का विश्लेषण करना है जो जनसंचार एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण शोध क्षेत्र बन जाता है।

प्रिंट मीडिया आम जनता तक सूचनाओं को पहुंचाने, जागरूकता फैलाने और अफवाहों को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। कोरोना महामारी के समय समाचार पत्रों ने जनता को वायरस की गंभीरता, सुरक्षा उपायों, सरकारी दिशा-निर्देशों तथा टीकाकरण अभियान के बारे में जानकारी दी। यह अध्ययन यह जानने का प्रयास करेगा कि प्रयागराज से प्रकाशित समाचार पत्रों ने महामारी को किस दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। क्या उन्होंने केवल आंकड़ों की प्रस्तुति की या जनता की पीड़ा, समस्याओं और सकारात्मक प्रयासों को भी प्रमुखता दी। इस शोध का व्यापक क्षेत्र जनसंचार एवं पत्रकारिता है, जिसमें विशेष रूप से प्रिंट मीडिया, संकट पत्रकारिता (Crisis Journalism) और स्वास्थ्य संचार (Health Communication) को केंद्र में रखा गया है। यह अध्ययन यह भी जांचेगा कि किस प्रकार से समाचार पत्रों की भाषा, शीर्षक, चित्रों और रिपोर्टिंग शैली ने पाठकों पर प्रभाव डाला। क्या समाचार पत्रों ने घबराहट बढ़ाई या संयम और आशा का संचार किया?

यह अध्ययन सामग्री विश्लेषण (Content Analysis) की विधि का उपयोग करते हुए समाचारों की विषयवस्तु, संरचना, स्रोत, और उनके सामाजिक प्रभाव का आंकलन करेगा। यह देखा जाएगा कि विभिन्न समाचार पत्रों में सरकारी घोषणाओं, विशेषज्ञों की राय, जमीनी रिपोर्टिंग और सामाजिक जागरूकता अभियानों किस तरह कवर किया गया।

प्रयागराज जो कि उत्तर भारत का एक प्रमुख धार्मिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक केंद्र है वहां के पाठकों की मानसिकता और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए समाचार पत्रों ने किस प्रकार से सूचनाएं दीं,यह भी अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू है।
यह अध्ययन पत्रकारिता के सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिकता और जनहित के सिद्धांतों की कसौटी पर भी समाचार पत्रों के प्रदर्शन को परखेगा। यह शोध न केवल कोविड-19 जैसे वैश्विक संकट में प्रिंट मीडिया की भूमिका को उजागर करता है बल्कि भविष्य की स्वास्थ्य या सामाजिक आपात स्थितियों में प्रिंट मीडिया के बेहतर संचालन के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करेगा।

Abhishek Kumar

4.0 उद्देश्य

1. हिंदी समाचार पत्रों में स्वास्थ्य ख़बरों की रिपोर्टिंग का अध्ययन।
2. कोविड-19 महामारी के प्रति पाठकों में जागरूकता लाने में हिंदी समाचार पत्रों की भूमिका का अध्ययन।
3. हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधित ख़बरों के स्रोत का अध्ययन।
4. कोविड-19 महामारी के दौरान हिंदी समाचार पत्रों के प्रकाशन एवं स्वास्थ्य रिपोर्टिंग में चुनौतियों का अध्ययन।
5. चयनित हिंदी समाचार पत्रों में स्वास्थ्य समाचारों का तुलनात्मक अध्ययन।

5.0 शोध पद्धति

इस शोध कार्य में वर्णनात्मक शोध पद्धति के अंतर्गत अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसमें आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति में विश्लेषण की इकाई के अंतर्गत खबरों को कोड देकर साथ ही सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया जाएगा। आंकड़ों का स्वरूप गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों है।

समय-सीमा

इस शोध कार्य के अंतर्गत समय सीमा को तीन चरणों में विभाजित किया गया है

प्रथम चरण- **1 मार्च 2020 से 31 मई 2020**

दूसरा चरण- **1 मार्च 2021 से 31 मई 2021**

तीसरा चरण **- 1 जनवरी 2022 में शुरू हुई और 31 मार्च 2022**

5.1 विषय-वस्तु विश्लेषण की इकाइयाँ:

विषय-वस्तु विश्लेषण शोध की एक प्रक्रिया है, जो गुणात्मक सामग्री को मात्रात्मक में परिवर्तित करके उसे एक व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ रूप प्रदान करती है। इसके लिए गुणात्मक सामग्री को वर्गीकृत करने के लिए निश्चित इकाइयों का चयन करना होता है। ये इकाइयाँ छोटी से लेकर बड़ी कई प्रकार की हो सकती हैं। इकाइयों का आवंटन और चयन अध्ययन सामग्री की प्रकृति और जटिलता पर निर्भर करता है। प्रस्तुत शोध में स्वास्थ्य से संबंधित सभी वस्तुओं का एक इकाई के रूप में विश्लेषण किया गया।

विश्लेषण की इकाई

1- कोविड-19 से संबंधित खबरें प्रथम पृष्ठ पर
2- राष्ट्रीय पृष्ठ
3- स्थानीय पृष्ठ
4- अंतरराष्ट्रीय पृष्ठ
5- सरकारी और स्थानीय प्रशासन के दिशा निर्देश
6- कोविड-19 से संबंधित स्रोतहीन समाचार का विश्लेषण (un-sourse news)
7- कोविड-19 से संबंधित भ्रामक ख़बरों का विश्लेषण (Misleading News)

Sadh

Abhishek kumar

8- संपादकीय सामग्री विश्लेषण

9- W.H.O संबंधित खबरों का विश्लेषण

10- वैक्सीन अपडेट

11- कोविड-19 पर विशेषज्ञों की राय

12- अन्य स्वास्थ्य समस्याएं

5.2 प्रतिदर्श का चयन

यह अध्ययन राष्ट्रीय हिंदी अखबारों पर किया जायेगा, इस अध्ययन कार्य में 2 राष्ट्रीय हिंदी अखबारों का चयन उद्देश्य पूर्ण प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा किया जायेगा।

1- दैनिक जागरण

2- अमर उजाला

(समाचार पत्रों का चयन उनके प्रसार (circulation) के आधार पर किया गया हैं।चयनित समाचार पत्र हिन्दी समाचार पत्रों में शीर्ष 2 स्थान वाले हैं।)

स्रोत- ABC(Audit Bureau OF Circulations)

5.3 स्थान

प्रयागराज में प्रकाशित हिंदी समाचार पत्र।

5.4 शोध उपकरण

कोविड-19 महामारी से संबंधित प्रकाशित समाचारों की प्रस्तुति का अध्ययन अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि से किया जाएगा साथ ही सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया जाएगा। प्रश्नावली के माध्यम से 200 पाठकों का और पत्रकारों,संपादकों एवं डॉक्टरों का संरचित साक्षात्कार (Structured Interview) किया जायेगा। इस अध्ययन कार्य में साक्षात्कार के लिए पत्रकारों, संपादकों का डीआईपीआर (सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय) की मदद से चयन किया जाएगा।

डेटा के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय उपकरण: - सभी डेटा के संयुक्त स्कोर की गणना SPSS सॉफ़्टवेयर की सहायता से की जाएगी।

5.5 अध्ययन का क्षेत्र

इस अध्ययन का क्षेत्र प्रयागराज शहर होगा।

6 अपेक्षित निष्कर्ष

यह शोध प्रयागराज से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्रों में कोविड-19 महामारी की प्रस्तुति का विश्लेषण करेगा जिससे यह समझा जा सकेगा कि प्रिंट मीडिया ने इस संकट काल में किस प्रकार की जानकारी प्रस्तुत की। इस अध्ययन से यह भी पता चलेगा कि समाचार पत्रों ने किन विषयों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया, सूचना कितनी संतुलित और तथ्यात्मक थी और किस हद तक जन जागरूकता बढ़ाने में भूमिका निभाई। इस शोध कार्य में यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि स्थानीय मुद्दों को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया और उनका सामाजिक प्रभाव क्या रहा।

यह शोध प्रयागराज से प्रकाशित प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों – अमर उजाला और दैनिक जागरण में कोविड-19 महामारी की रिपोर्टिंग और उसकी प्रस्तुति के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करता है। वैश्विक महामारी कोविड-19 ने समस्त मानव जीवन

Sadhan

Abhishek Kumar

को प्रभावित किया और ऐसे संकट में मीडिया विशेषकर प्रिंट मीडिया ने सूचना देने, जनजागरूकता फैलाने और सामाजिक प्रतिक्रिया को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि महामारी के दौरान समाचार पत्रों ने किस प्रकार की सूचनाएँ दीं उन्हें किस शैली में प्रस्तुत किया और उनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ा। शोध का पहला प्रमुख पहलू रिपोर्टिंग की प्रवृत्तियों से जुड़ा है। यह देखा गया कि क्या मीडिया ने लोगों में जागरूकता फैलाने की कोशिश की या केवल भय और असुरक्षा का वातावरण पैदा किया। दूसरा पहलू समाचारों में प्रयुक्त स्रोतों की विश्वसनीयता का है। यह अध्ययन करेगा कि क्या समाचार रिपोर्टों में सरकारी स्रोतों, विशेषज्ञों की राय और प्रामाणिक आँकड़ों को प्राथमिकता दी गई या अफवाहों व अपुष्ट जानकारियों को स्थान मिला। इससे समाचार पत्रों की विश्वसनीयता और पत्रकारिता की नैतिकता का मूल्यांकन किया जा सकेगा।तीसरा महत्वपूर्ण पक्ष है भाषा, शीर्षक, चित्रों और प्रस्तुति की शैली का। यह देखा जाएगा कि अखबारों ने सनसनीखेज या भावनात्मक भाषा का इस्तेमाल किया या वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर जानकारी दी। हेडलाइन, फोटो और शब्दावली पाठकों की मानसिकता को प्रभावित करते हैं और इस पहलू से यह समझा जा सकेगा कि मीडिया ने जनता की भावनाओं को कितना संवेदनशीलता से संभाला।

चौथा निष्कर्ष समाचारों का सामाजिक प्रभाव है। यह शोध यह विश्लेषण करेगा कि क्या समाचार पत्रों की रिपोर्टिंग से लोगों में स्वास्थ्य दिशा-निर्देशों को लेकर जागरूकता बढ़ी या डर, भ्रम और नकारात्मकता फैली। यह मीडिया की सामाजिक भूमिका और जिम्मेदारी को उजागर करता है।

अंततः यह शोध प्रिंट मीडिया की जिम्मेदारी, नैतिकता और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करेगा जो भविष्य में ऐसी आपात स्थितियों के दौरान प्रिंट मीडिया की भूमिका को बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होगा। यह अध्ययन न केवल कोविड-19 की प्रस्तुति को समझने में सहायक होगा बल्कि भविष्य की आपात परिस्थितियों में प्रिंट मीडिया की भूमिका को बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

ग्रन्थसूची

. जायसवाल श्याम हर्षित, (2020), समाचार के विभिन्न माध्यमों में कोरोना महामारी की रिपोर्टिंग का तुलनात्मक अध्ययन , संचार माध्यम ISSN 2321-2608

. नगून्दे सोनाली , काले मनीष (2021) कोरोना काल में प्रिंट मीडिया की विश्वसनीयता ,कम्युनिकेशन टुडे ISSN 0975-217x

. मार्टिन मैथ्यू जे. पी. (2021) कोविड -19 'इंफोडेमिक' एंड वल्नरेबल कम्यूनिटीज : ए कंटेंट एनालिसिस ऑफ डेली न्यूजपेपर्स , कम्युनिकेशन टुडे ISSN 0975-217x

. सिंह आर अर्चना , ओहरी प्रियंका , सिंह इशरत (2021) न्यूज वैल्यूज इन पैंडमिक कवरेज : एनालिसिस ऑफ कोविड-19 स्टोरीज इन इंडियन न्यूजपेपर्स , कम्युनिकेशन टुडे ISSN 0975-217x

. सुल्ताना निगर तहमीना ,संदीप , काकडे ओंकारागोडा (2021) रोल ऑफ कन्नड़ न्यूज चैनल्स इन क्रिएटिंग कोविड - 19 अवेयरनेस : ए स्टडी ऑफ विजयपुरा डिस्ट्रिक्ट इन कर्नाटक ,कम्युनिकेशन टुडे ISSN 0975-217x

Sd/-
Abhishek Kumar

. Barry, J. M. (2004). The Great Influenza: The Epic Story of the Deadliest Plague in History.

. Fauci, A. S. (2020). COVID-19—Navigating the Uncharted. The New England Journal of Medicine, 382(13), 1268-1269.

Pandey, H. K., & Kumar, S. (2020). Title of the article: Role of Print Media in Spreading Awareness on Coronavirus Disease (COVID-19). Journal of Xi'an University of Architecture & Technology, Volume (12), 5203-5212.

. Rehman, A. U., Zakar, R., Zakar, M. Z., Hani, U., Wrona, K. J., & Fischer, F. (2021, November 12). Role of the Media in Health-Related Awareness Campaigns on Perception of COVID-19: A Pre-post Study in the General Population of Pakistan. Frontiers in Public Health.

. Zafri, N. M., Afroj, S., Nafi, I. M., & Hasan, M. M. U. (2021). A content analysis of newspaper coverage of COVID-19 pandemic for developing a pandemic management framework. Heliyon. Volume(7) .

Zeng, L. (2023, February 3). Changes in health communication in the age of COVID-19: A study on the dissemination of preprints to the public. Frontiers.

Web Sites

. khan, S. (2023, October 10). Jab top muqabil ho akhbar nikalo. News18 Hindi. https://hindi.news18.com/blogs/shakeel-khan/ganesh-shankar-vidyarthi-death-anniversary-jab-top-muqabil-ho-akhbar-nikalo-5647007.html

• Dainik Bhaskar. (2023, December 10). Current and later effects of coronavirus globally. *Dainik Bhaskar*. https://www.bhaskar.com/coronavirus/news/current-and-later-effects-of-corona-virus-globally-127290995.html

• John, D., & Smith, A. (2020). The first confirmed case of COVID-19 in India: A case report. National Center for Biotechnology Information. **https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7530459/**

. Columbia University Mailman School of Public Health. (n.d.). Content analysis. Columbia PublicHealth. https://www.publichealth.columbia.edu/research/population-health-methods/content-analysis

Sadhna
Abhishek Kumar

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	abhishek
Title	synopsis_16-05-2025
Paper/Submission ID	3621638
Submitted by	drsadhana@uprtou.ac.in
Submission Date	2025-05-16 14:18:28
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **2%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

2	3	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	2	Publication
2	Paper Submitted to Banaras Hindu University	<1	Student Paper
3	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication